अहिंसा यात्रा आज लाडनूं पहुंची

परिवर्तन गांवों के द्वारा हो सकता है : आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 20 जून।

आचार्य महाप्रज्ञ के 90 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में निकाली गई दस दिवसीय अहिंसा यत्रा जन्मस्थली टमकोर से 10 जून, 2009 को प्रारंभ की गई गई अहिंसा यात्रा आज लाडनूं पहुंची। लाडनूं के ऋषभद्वार से साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने मंगल आशीर्वाद प्रदान किया उसके पश्चात प्रातः 9.00 बजे जैन विश्व भारती के भिक्षु विहार में आचार्य श्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में पहुंची। यात्रा में छह राज्यों से नब्बे अहिंसा यात्री सहभागी बने।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अभी अहिंसा यात्रा का एक रूप सामने आया अहिंसा प्रशिक्षण का जो काम चल रहा है वह सारा अहिंसा यात्रा का ही कार्यक्रम है। जब चलते हैं तो अहिंसा यात्रा बन जाती है नहीं तो अहिंसा प्रशिक्षण चलता है। अभी जो एक नया प्रयोग किया गया कि छोटे गांवों से कार्य शुरू किया गया। टमकोर छोटा गांव है उसके आस-पास अहिंसा प्रशिक्षण का काम चल रहा है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि यदि कोई परिवर्तन लाना है तो गांवों से हो सकता है, नगरों से नहीं हो सकता। नगरों से हिंसा की क्रांति तो हो सकती है पर परिवर्तन नहीं हो सकता। उस बात को महात्मा गांधी ने भी दोहराया और आचार्य भिक्षु ने साधु-साध्वियों से कहा था कि गांवों में जाओ गांवों में काम करो। एक जन्म घूंटी माननी चाहिए कि आचार्य भिक्षु का जो मार्गदर्शन मिला है कि परितर्वन करना है तो गांवों से करो, क्योंकि गांवों के लोग जितने बदल सकते हैं शायद शहर के लोग इतने भोग विलास वाले होते हैं उनकी चेतना ही मूर्च्छित हो जाती है, मूर्च्छित चेतना वाले परिवर्तन कर ही नहीं सकते गांव की चेतना मुर्च्छित नहीं होती क्योंकि गांव की चेतना जागृत होती है उसे जगाया जा सकता है। ऐसा काम चले तो टमकोर गांव झुन्झुनू गांव के आस-पास एक क्रांतिकारी परिवर्तन हो सकता है। अहिंसा यात्रा का रूप सामने आया है और यह आगे चले तो जनता का बहुत भला हो सकता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि यह अहिंसा का स्वर, अहिंसा का शखनाद अहिंसा का संदेश जिसे हम स्वयं आत्मसात करते रहें और जनता तक भी अहिंसा नैतिकता की बात को पहुंचा सकें और जनमानस को तन्मय बना सके तो जनता की भी अच्छी सेवा हो सकेगी।

इस अवसर पर समणी प्रतिभा प्रज्ञा ने यात्रा का एलबम आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट करते हुए यात्रा में किये गये कार्यों की जानकारी देते हुए कहा कि यात्रा के दौरान जब गांवों से गुजरते जगह-जगह नरेगा का कार्य चल रहा था तो वहां जाकर उन्हें नशा नहीं करने का संकल्प करवाया।

समणी पुण्य प्रज्ञा ने गीत की प्रस्तुति दी।

यात्रा के सहभागी भीखमचन्द नखत ने कहा कि यात्रा करके आचार्य महाप्रज्ञ के दर्शन कर हम धन्य-धन्य हो गए हैं।

साधुशरण 'सुमन' ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।